मोदी-झूठ के साक्षी बने अमर सिंह से मेहुल भाई तक

रवीश कुमार की
विशेष रिपोर्ट

"वरना कुछ लोगों का आपने देखा होगा, उनकी एक फोटू आप नहीं निकाल सकते हैं किसी उद्योगपति के साथ लेकिन एक देश का उद्योगपति ऐसा नहीं है जिन्होंने उनके घरों में जाकर षाष्टांग दंडवत न किए हों, ये अमर सिंह यहां बैठे हैं, सारा हिस्ट्री निकाल देंगे। लेकिन जब नीयत साफ हो, इरादे नेक हों तो किसी के साथ भी खड़े होने से दाग नहीं लगते हैं, महात्मा गांधी का जीवन जितना पवित्र था, उनको बिड़ला जी के परिवार के साथ जाकर रहने में कभी संकोच नहीं हुआ। बिड़ला जी के साथ खड़े रहने में कभी संकोच नहीं हुआ। नीयत साफ थी। जिन लोगों को पब्लिक में मिलना नहीं है, पर्दे के पीछे सब कुछ करना है वो करते रहते हैं।"

प्रधानमंत्री मोदी का यह बयान इस बात का क्लासिक उदाहरण है कि राजनीति में अब आरोप और जवाब दोनों ही पुराने हो चुके हैं। कोई आरोप लगाइये तो याद आता है कि पहले भी किसी पर लग चुका है, कोई जवाब दीजिए तो याद आता है कि पहले भी किसी ने ऐसा जवाब दिया है। लखनऊ में निवेशकों के सामने प्रधानमंत्री के बयान के इस टुकड़े के बहाने मुझे भी कुछ याद आया। इंटरनेट पर काफी खोजा मगर एक मित्र की मदद से एक दूसरे बयान का टुकड़ा मिल गया जो बीजेपी के ही एक नेता ने इसी तरह के संदर्भ में कभी कहा था।

प्रधानमंत्री मोदी ने साढ़े चार साल बाद यह जवाब खोजा है कि वे उद्योगपतियों के साथ खुले में मिलते हैं। फोटो खींचाते हैं। उनकी नीयत साफ है। गांधी जी की तरह नीयत साफ है। गांधी जी भी बिड़ला जी के साथ जाकर रहते थे क्योंकि उनकी नीयत साफ थी। बिड़ला जी और अदानी जी और अंबानी जी की तुलना हो सकती है या नहीं हो सकती है इसका जवाब एक लाइन में नहीं दिया जा सकता है। मगर बिड़ला जी और गांधी का उदाहरण देते ही मेरे दिमाग में कुछ ठनक गया। ठीक इसी तरह का बयान बीजेपी के एक नेता ने दिया था। मुझसे ही बात करते हुए दिया था।

2003 का साल था। इंडिया टुडे ग्रुप और एक्सप्रेस ने दिलीप सिंह जूदेव का स्टिंग किया था। उन पर भ्रष्टाचार के आरोप लग रहे थे। उनका एक बयान खूब छप रहा था कि पैसा खुदा तो नहीं मगर खुदा से कम भी नहीं। इसी विवाद के संदर्भ में जूदेव मेरे साथ बात कर रहे थे। रायपुर में अपने स्टाइल से मेरे कंधे पर हाथ रखा और कहते चले गए। वो हिस्सा पहले पढ़िए। हिन्दी वाला मूल बयान तो नहीं मिला मगर इंटरनेट पर इसका अंग्रेज़ी अनुवाद मिल गया जिसका मैं फिर से हिन्दी अनुवाद कर पेश कर रहा हूं।

आपको धर्मांतरण रोकने के लिए सेना की ज़रूरत होगी। चुनौतियां आ सकती है और समय भी कम है । मान लीजिए कोई रसद देता है, इसे ग़लत समझा गया है। उसका बिल कौन भरेगा। जब चंद्रशेखर आज़ाद और भगत सिंह लड़ रहे थे तब बिड़ला जी महात्मा गांधी के पास जाते थे। वो रसद कहां से लाते थे। (18 नवंबर के इंडियन एक्सप्रेस में छपा है)

दिलीप सिंह जूदेव भाजपा के सांसद थे और तब मुख्यमंत्री के उम्मीदवार के रूप में उनका नाम लिया जाता था। अब इस दुनिया में नहीं है। मैं पहली बार चुनाव कवर करने गया था। जूदेव के इस बयान के बाद काफी हंगामा मचा था और वे नाराज़ हो गए थे मगर तब तक देर हो चुकी थी। हमारे चैनल पर उनका यह बयान तेज़ी से छा गया था।

प्रधानमंत्री मोदी पर राहुल गांधी ने जब सूट बूट की सरकार का आरोप लगाया था तब सूट उन्होंने ही पहना था, राहुल गांधी ने नहीं। उस सूट पर उनके नाम लिखे थे। इतनी जल्दी एक नेता के लिए नाम वाला सूट मटीरियल बन जाए और सिल जाए, कमाल की बात है। ये शौक की बात है या ख़ास संबंध की, इतिहास कभी नहीं जान पाएगा क्योंकि प्रधानमंत्री कभी बताएंगे नहीं। वो इसलिए उन्हें कोई हरा नहीं सकता और 2024 तक वे ही प्रधानमंत्री हैं। लोकसभा में अविश्वास प्रस्ताव के दौरान बोलते हुए उन्होंने ऐसी ही बात कही थी।

प्रधानमंत्री की वो सूट नीलाम कर दी गई। राहुल गांधी ने आरोप ही लगाया था कि सूट बूट की सरकार है, मगर इतना असर हो गया कि दोबारा उस सूट की बात कभी नहीं हुई। आज के जवाब के हिसाब से उन्हें अपने उस ख़ास सूट की नीलामी नहीं करनी चाहिए थी। जब नमो ब्रांड के कुर्ता और जैकेट बन सकता है तो नमो लिखा हुआ सूट प्रधानमंत्री क्यों नहीं पहन सकते हैं। सूट पहनकर वे पर्दे के पीछे नहीं थे, सबके सामने आए थे। बराक भी बगल में थे। प्रधानमंत्री लखनऊ वाले इस भाषण में अमर सिंह को साक्षी बनाया है। अमर सिंह इतने प्रासंगिक तो है हीं जो प्रधानमंत्री की सभा में बैठे हैं, जो एक टीवी इंटरव्यू में खुलकर कहते हैं कि मैं दलाल हूं। दलाल। मैं हतप्रभ रह गया था। उन आदरणीय अमर सिंह को साक्षी बनाकर प्रधानमंत्री कहते हैं कि अमर सिंह यहां बैठे हैं, सबकी हिस्ट्री निकाल देंगे। इसी तरह से उन्होंने मुंबई में मेहुल भाई को साक्षी बनाया था। जो अब एंटीगा के नागरिक बन चुके हैं।

प्रधानमंत्री बता रहे थे कि खरीदार बड़े सुनाकर से ख़रीदने के बाद भी अपने गांव के सुनार से चेक कराता है। बैंक पर भरोसा नहीं करता और सामने बैठे मेहुल भाई की तरह इशारा करते हुए कहते हैं कि हमारे मेहुल भाई यहां बैठे हैं लेकिन वो जाएगा अपने सुनार के यहां। अमर सिंह और मेहुल भाई को साक्षी बनाकर बात कहने का खेल प्रधानमंत्री ही कर सकते हैं। ये खेल उन्हीं को आता है।

अविश्वास प्रस्ताव के दौरान राहुल गांधी ने उन पर भागीदार होने के आरोप लगाए हैं। वे आरोप हैं रफाएल डील के ठीक पहले अनिल अंबानी अपनी कंपनी बनाते हैं और उस कंपनी को हज़ारों करोड़ का करार मिलता है। इसलिए रफाएल लड़ाकू विमान का दाम नहीं बताया जा रहा है। राहुल के आरोपों के संदर्भ में माल्या,नीरव मोदी, मेहुल चौकसी भी हैं। राहुल ने कहा कि चौकीदार भागीदार हो गया है।

प्रधानमंत्री इसका सीधा जवाब दे सकते थे। मगर उनके मन में कहीं अपराध बोध होगा कि उद्योगपतियों के साथ उनके संबंध को लेकर तंज कसा जाता है। उद्योगपतियों के साथ या एक दो उद्योपति के साथ तंज होता है, ये आप जानते हैं। मगर एक दो उद्योगपतियों के साथ दिखने और उन पर मेहरबान होने को लेकर होने वाले तंज को खूबसूरती से बदल देते हैं। वे इस तरह से पेश करते हैं जैसे विपक्ष यह कहता हो कि प्रधानमंत्री को उद्योगपतियों के साथ दिखना ही नहीं चाहिए।

इन आरोपों का जवाब न देकर प्रधानमंत्री अपनी छवि को गांधी और बिड़ला जी के संबंधों की छवि के पास ले जाते हैं। सवाल है कि सड़क पर गड्ढे क्यों हैं, जवाब में मोदी जी कह रहे हैं कि पहले चांद देखो। वो देखो चांद। विपक्ष उस दाग़ को गड्ढे बता रहा है। असली सवाल से नज़र हटाने में उनका कोई सानी नहीं। उन्होंने यह कह दिया कि वे उद्योगपतियों से सबके सामने फोटो खींचाने से परहेज़ नहीं करते मगर सवाल तो कुछ और था। उस सवाल का जवाब देते तो शायद उनका यह जवाब 15 साल पहले जूदेव के जवाब से जाकर न टकराता।

लेकिन इस क्रम में वे राहुल को जवाब नहीं दे रहे थे बल्कि दिलीप सिंह जूदेव का दिया हुआ जवाब 15 साल बाद दोहरा रहे थे। नियति सिर्फ हार और जीत के दिन नहीं होती, वो जीत के बाद भी अपना खेल खेलती रहती है। जूदेव भी गांधी और बिड़ला के संबंधों का ढाल की तरह इस्तमाल करते हैं और मोदी भी बिड़ला और गांधी के संबंधों का इस्तमाल करते हैं। जब भी बचाना होता है गांधी काम आ जाते हैं।

बता नहीं सकते

प्रदीप कासनी

- साहब की डिग्री ...बता नहीं सकते!
- मेम साहब की डिग्री ...बता नहीं सकते!
- साहब का वैवाहिक स्टेटस ...बता नहीं सकते।
- अमित शाह के लौंडे का व्यवसाय हज़ारों गुना कैसे बढ गया ...बता नहीं सकते।
- नोटबन्दी में वापिस आया धन, कालाधन ...बता नहीं सकते!
- स्विट्ज़रलैंड में काला धन रखने वाले खाताधारकों के नाम ...बता नहीं सकते।
- जीएसटी को इतना बदलना था तो रात को बारह बजे घण्टे बजा लागू करने की क्या ज़रूरत थी ...बता नहीं सकते।
- राफेल डील में जहाज़ इतना महंगा क्यों खरीदा ...बता नहीं सकते।
- सरकारी हिंदुस्तान ऐरोनॉटिक्स लिमिटेड की बजाय राफेल असेम्बलिंग और पूर्ज़ों का काम कल ही आनन फानन में बनाई गई अम्बानी की कंपनी को क्यों दिया ...बता नहीं सकते।
- आधार कार्ड का अब क्या इस्तेमाल होगा ...बता नहीं सकते।
- एनआरसी ड्राफ्ट में 40 लाख लोगों में से 14 लाख हिन्दू घुसपेंठिये कहां से आये ...बात नही सकते।
- वाराणसी पुल के गुप्त ठेकेदार का नाम क्या है ...बता नहीं सकते।
- दिल्ली मेरठ एक्सप्रेस वे में इतनी जल्दी गड्ढे और दरारे कैसे पड़ गई ...बता नहीं सकते।
- संबित पात्रा के डायरेक्टर रहते ओएनजीसी अम्बानी की गैस चोरी की रिकवरी क्यों न कर सका ...बता नहीं सकते।
- "बता नहीं सकते" मोदी सरकार का मुख्य नारा!

23000 फकीर पहले ही झोला उठा कर निकल चुके हैं.....

क्यों देश का अमीर आदमी पहला मौका मिलते ही भारत छोड रहा है?

शशि शेखर की विशेष रिपोर्ट

मेहुल भाई एंटीगुआ के नागरिक बन गए है। 14000 करोड के बैंक फर्जीवाडे के आरोपी है। अगले एक महीने में नीरव भाई अजरबाइजान के नागरिक बन जाए, तो चौंकिएगा नहीं। मॉर्गन स्टैनले की रिपोर्ट है। 2014 से अभी तक 23 हजार भारतीय अमीर भारत छोड चुके है। ज्यादातर ने यूके, दुबई और सिंगापुर की नागरिकता ले ली है। इनकी औसत संपत्ति 1 मिलियन डॉलर से अधिक की है। यानी, भारतीय अमीरों का करीब 2।1 फीसदी हिस्सा देश छोड चुका है।

एक और रिपोर्ट है। चीन, रोमानिया और सीरिया के बाद, भारत सबसे बडा देश है, जहां से सिर्फ 2016 में 271503 लोगों ने अन्य देशों के लिए पलायन किया। इसमें नौकरी करने वालों से ले कर बिजनेसमैन तक शामिल है। इस रिपोर्ट की व्याख्या कई तरीकें से की जा सकती है। लेकिन, उपरोक्त दो खबरें ये बताती है कि बीते चार सालों में हजारों अमीर लोगों ने बकायदा भारत से निकल कर दूसरे देशों की नागरिकता ले ली है।

तो इस सब का मतलब क्या है? मतलब कुछ भी हो सकता है। लेकिन, जो मैं समझ रहा हूं, वो यही कि हमारे देश के मंत्री तक अपने बच्चों को भारत में नहीं विदेशों में पढाना चाहते है। बेहतर इलाज के लिए विदेश जाते हैं। तकरीबन हर करोडपति बिजनेसमैन ने अपने लिए एक सुरक्षित ठिकाना बना लिया है। कल को कोई दिक्कत हो तो पल भर में रफ्फूचक्कर।

एक और बात। यकीनी तौर पर कह सकता हूं कि इस देश का हर वो आदमी, जिसके पास 50-100 करोड रुपये से अधिक है, वह कम से कम वैसा अन्न, दूध, पानी, सब्जी तो नहीं ही खाता, जो हम-आप जैसे लोग खाते हैं। पुणे में एक डेयरी है। सुना है, वहां से हर रोज मुंबई दूध सप्लाई की जाती है। वह दूध बडे लोगों के पास जाता है। कीमत है, शायद 500 रुपये प्रति लीटर। ये जो आप देश में जैविक खेती की बहार देख रहे है न, वह भी इन्हीं करोडपति लोगों के लिए शुरु की गई है। मतलब, जिनके पास पैसा है, वो न वह दूध या पानी पीते है, जो हम और आप पी रहे हैं। उसका प्रतिबिंब उनके चमचमाते चेहरे है। 60 साल, 70 साल की उमर में भी फिट। यहां 40 के बाद बुढापा कब आ जाता है, पता ही नहीं।

तो क्या सचमुच हम कैटल क्लास है। है। बिना शक। कैटल न होते तो कम से कम अपने बारे में सोचते, अपने बच्चों के बारे में सोचते। ये सोचते कि आखिर हमारे देश को, हमारे देश की आबो-हवा को, यहां की मिट्टी को, पानी को, दूध को, सब्जी को, अनाज को किसने और क्यों खराब कर दिया? क्यों और किसने इसे जहर बना दिया? कौन है जो हमें पहले जहर दे रहा है और फिर बाद में दवा भी बेच रहा है।

सोचिए, क्यों देश का हर अमीर आदमी पहला मौका मिलते ही भारत छोड रहा है..... आखिरकार इस देश में तो हमें ही रहना है। फकीर तो झोला उठा कर निकल ही रहे है, आगे भी निकलते रहेंगे.....

मानवता आधारित शिक्षा

ऋषिपाल चौहान
चेयरमैन, जीवा पब्लिक स्कूल

आज के युग में मानव ने अपने सुविधाओं के लिए अनेक साधन बना लिए हैं। यातायात के लिए कार व हवाईजहाज, विचार आदान-प्रदान के लिए मोबाइल व इंटरनेट, गर्मी से बचने के लिए ए0 सी0 इत्यादि का निर्माण मनुष्य ने कर लिया है। लेकिन इन भौतिक साधनों में मनुष्य इतना लीन हो गया है कि वह अपनी मनुष्यता को खो रहा है। आज की शिक्षा पद्धति भी तकनीकी ज्ञान पर ही आधारित है। हम अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा दे रहे हैं कि वे भी अपने सपनों को साकार करना ही सर्वोपरि मानते हैं व तकनीकि सुविधाओं पर पूरी तरह ही निर्भर रहने लगे हैं।

यदि बच्चे स्कूली शिक्षा के दौरान भौतिक ज्ञान के साथ मानवता का पाठ नहीं पढ़ेंगे तो वे आगे चलकर रोबोट की भांति बन जाएंगे। मानवता का रोबोटिकरण हो जाएगा, जो केवल बताए गए दिशा-निर्देश पर ही कार्य करेंगे जिनमें बुद्धि एवं भावनात्मक संवेदनाएं नहीं होंगी। ऐसे में समाज का पतन होना निश्चित है। ऐसी स्थिति से बचने के लिए बच्चों को मानवता आधारित शिक्षा देना महत्वपूर्ण हो गया है।

आने वाले समय में अनेक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा जो सामाजिक, मानसिक, भावनात्मक एवं आध्यात्मिक होंगी। इसलिए उनके समाधान के लिए सामाजिक विज्ञान, नैतिक शिक्षा, आध्यात्म एवं मनोविज्ञान आदि विषयों को पाठ्यक्रम में जोड़ना होगा। इसके अलावा बच्चों को स्वयं के बारे में अध्ययन करना (स्वाध्याय), परिवार के साथ मिल-जुल कर रहना, दूसरों की सहायता करना सिखाना भी अभिभावकों एवं अध्यापकों का ही कर्त्तव्य है। अपने आस-पास का वातावरण स्वच्छ रखना, अपनी प्रकृति के अनुसार भोजन ग्रहण करना भी वे अवश्य सीखें। स्वज्ञान द्वारा समाज का पोषण कैसे किया जाए यह भी शिक्षा या पाठ्यक्रम का अंग होना आवश्यक है। बच्चों को स्कूली शिक्षा के दौरान पदार्थ ज्ञान द्वारा समाज को पोषण करना सिखाने के साथ-साथ भावनात्मक प्रेम एवं सम्मान, भाईचारा इत्यादि की भावना को सिखाना भी बेहद ज़रूरी है।